संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो और मेरे सभी पाठकों – मसीह में मेरे भाइयों और बहनों को हार्वेस्ट की बहुत–बहुत बधाई। यह आने वाला वर्ष आपके जीवन के हर पहलू में फलदायी हो, और मैं प्रार्थना करती हूं कि आपका जीवन आपके आस–पास के सभी लोगों के लिए एक आशीर्वाद हो।

भजन संहिता 36:8–9 ''वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा। क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे।''

जब हम अपने प्रभ यीशु के साथ बने रहेंगे, तो वह हमें हर संभव तरीके से बहुतायत में आशीष देंगे। हमें न केवल भौतिक चीज़ों से, बल्कि आत्मारिक आशीषों से भी आशीष पाएंगे। यहोवा हम पर अपना प्रकाश इस प्रकार चमकाएंगे कि भले ही संसार अन्धकार से ढका हो, संसार के लोग जानेंगे कि हम इस जगत की ज्योति की सन्तान हैं; क्योंकि प्रभु का प्रकाश हम में से चमकेगा।

यशायाह 43:19 ''देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊँगा और निर्जल देश में नदियाँ बहाऊँगा।'' जब प्रभु हमारे जीवन में कार्य करना शुरू करते हैं, तो हमारा जीवन बेहतर के लिए बदल जाएगा, इतने बड़े पैमाने पर और कई अलग–अलग तरीकों से की मानव समझ से भी परे। जब कोई आशा नहीं होती, वह हमें आशा देंगे। वह जंगल में मार्ग और मरुभूमि में नदियां बनाएगा, क्योंकि हमारा परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो नामुमकिन को भी संभव कर सकते है।

भजन संहिता 121:4 ''सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊँघेगा और न सोएगा।'' दाऊद जानता था कि हमारा प्रभु परमेश्वर अपने लोगों पर हमेशा नजर रखते है। वह समझ गया कि प्रभु उसकी हर कमजोरी और ताकत को जानता है। हमारा परमेश्वर जीवित है, और वह निर्बलों और थके हुओं को बल देने वाला परमेश्वर है। इसलिए, हमें अपने जीवन की हर स्थिति में प्रभु परमेश्वर में आनन्दित होना चाहिए। बाइबिल में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ परमेश्वर के शक्तिशाली पुरुष अपने जीवन के एक निश्चित पढ़ाव पर कमजोर थे। परमेश्वर के इन लोगों ने इस पढ़ाव पर परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ का अनुभव किया, जब वे अपने सबसे निचले स्तर पर थे। शैतान निश्चित रूप से हमारे शारीरिक रूप में, और मानसिक रूप से, और भावनात्मक रूप से, हमारे विचारों में भी कमजोरी लाएगा। लेकिन हमें विश्वास होना चाहिए कि हमारा परमेश्वर हमारे मार्गों को जानता है, और वह हमें समय पर मजबूत करेंगे ताकि हम शैतान के शिकार न हों।

2 थिस्सलुनीकियों 2:17 ''तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे।'' जब हम प्रभु के लिए खड़े होते हैं, तो वह हमें हर अच्छे बात और काम में स्थापित

करेंगे। परमेश्वर हमें शक्ति, शांति और अधिकार प्रदान करेंगे कि हम अपने सिरों को ऊपर उठाकर अपना जीवन व्यतीत करें। हम दुनिया और जीवन की हर स्थिति का सामना करेंगे, जब हम अपने प्रभु को खुश करेंगे; नहीं तो छोटी से छोटी असफलता भी हमें तोड़ देगी।

आने वाला वर्ष हम सभी के जीवन में एक समृद्ध हार्वेस्ट हो। पवित्र बाइबिल के जीवित वचनों पर भरोसा रखें और उन्हें थामे रहें, और विश्वास में प्रार्थना करें; और आपके जीवन का सब जंगल, फलवन्त हो जाएगा।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर के क्रूस को विश्वास के साथ उठाना।

अय्यूब 5:17 ''देख, क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान।'' लोग सोचते हैं कि प्रभु के बच्चों को कभी सुधार नहीं मिलेगा, वे कभी बीमार नहीं होंगे, कभी उनके गलत होने की सजा नहीं मिलेगी। परन्तु वचन कहता है, यशायाह 45:7 ''मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूँ, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूँ, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्ता हूँ।'' प्रभु जिसने इस दुनिया को बनाया है, हमें दिन और रात दिया है, उन्होंने हमें प्रकाश दिया है और अंधेरा भी रखा है। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है इस प्रकार वह हमें सुधारते है और हमें हमेशा परमेश्वर के सुधार पर ध्यान देना चाहिए। इब्रानियों 12:7–11 ''तुम दुःख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे। फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें। वे तो अपनी–अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते–सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।'' जब परमेश्वर हमें सुधारते है और चाहते है कि हम बदलें, तो वह सोचते है और कि हम उनके बच्चे हैं, इसलिए अधिकार के साथ वह हमें सुधारना चाहते है ताकि हम सही हो जाएं और हमारे जीवन के पाठ्यक्रम को बदल दें। वचन 11 ''वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते–सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।'' यह वह हमारे आज के होनेवाले फायदे के लिए नहीं करते है, बल्कि यह कि वह हमारे भविष्य के बारे में सोचते है और हमें सुधारते है।

फूल दो प्रकार के होते हैं, गुलाब और सोसन, आइए हम श्रेष्ठगीत 2:1 में पढ़ते हैं,''मैं शारोन देश का गुलाब और तराइयों में का सोसन फूल हूँ।'' हर कोई गुलाब को प्यार करता है, यह सबसे ज्यादा देखा और आदान–प्रदान करने वाला फूल है। लोग बड़े मौकों पर गुलाब का गुलदस्ता उपहार में देना पसंद करते हैं। लेकिन सोसन, घाटी में कांटों के बीच पाई जाती है, भले ही यह कांटों के बीच होती है, लेकिन इसकी एक अच्छी सुगंध होती है और इस तरह यह मधुमक्खियों के भार को आकर्षित करती है। इसी तरह, इस दुनिया में दो तरह के विश्वासी हैं एक विश्वासी गुलाब की तरह है और दूसरा सोसन जैसा है। आइए हम पढ़ें इब्रानियों 11:33–36 ''इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं; सिंहों के मुँह बन्द किए; आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले; निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार

भगाया। स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा, इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों। कई एक ठट्ठों में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने वरन् बाँधे जाने, और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए।'' एक विश्वासी ऐसा है जैसे वचन 35 ''स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवित पाया;'' दूसरे प्रकार का विश्वासी ऐसा है ''कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा, इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों।'' यहाँ तक कि जब भागने का अवसर भी मिला तो वे भागे नहीं, बल्कि प्रभु के लिए कष्ट उठाने का चुनाव किया। ये विश्वासी सोसन के समान हैं। जब यीशु मसीह वापस आएंगे तो हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि इन दोनों में से कौन सा फूल प्रभु को ज्यादा प्रिय होगा। यह सोसन प्रकार के विश्वासी ऐसे हैं जो प्रभु यीशु के बगलवाले बनाए हुए स्थान के करीब एक जगह प्राप्त करेंगे। क्योंकि सोसन फूल प्रकार के विश्वासी, हालांकि उन्हें भागने का अवसर मिला, वे भागे नहीं, बल्कि उन्होंने प्रभु के लिए कष्ट उठाना चुना और प्रभु के लिए इस दुनिया में सभी परीक्षणों और क्लेशों से गुजरने के लिए तैयार थे। इस दुनिया में हमारा जीवन भी सोसन फूल की तरह होना चाहिए। गुलाब एक आम फूल है, जिसका सबसे अधिक आदान–प्रदान होता है। लेकिन कांटों के बीच पाई जाने वाली सबसे दुर्लभ प्रकृति और सुगंध के साथ सोसन फूल, यह निश्चित रूप से एक 'विशेष जीवन' है। श्रेष्ठगीत 2:2 ''जैसे सोसन फूल कँटीले पेड़ों के बीच वैसे ही मेरी प्रिय युवतियों के बीच में है।'' जब यीशु हमें लेने आएंगे, तो हम उनकी दुल्हन की तरह उठा लिए जाएंगे। लेकिन दुल्हनों में सोसन फूल खास होगी, इसलिए सोसन फूल सभी दुल्हनों के मध्य में होगी। जो लोग भागने के बजाय प्रभु के लिए दृढ़ रहे और इस पृथ्वी पर पीड़ित हुए। जो यहोवा के पक्ष में खड़े होते हैं, जो यह अनुभव करते हैं कि यहोवा की परीक्षाएं उन्हीं की हैं और जो यहोवा की साक्षी बनते हैं, वे तराई के कुसुम हैं। याद रखें प्रभु हमारे हर दुख से सचेत हैं। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि प्रभु के बच्चों के जीवन में कोई दंड, परीक्षण और क्लेश नहीं हैं, कोई बाधा नहीं है। हां, उनके मुंह से निकलने वाले हर शब्द के लिए वे भी जवाबदार हैं। जब हमें इस दुनिया में दुख नहीं हैं तो हम प्रभु के बच्चे नहीं हैं। प्रभु को हमें सुधार देना होगा ताकि हम मित्रभाव से एक परिपूर्ण जीवन जी सकें। नहीं तो हम इस दुनिया में अनाथ हो जाएंगे। हमारा परमेश्वर जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया, वह हमें हमारे गलत कामों के लिए सुधार देंगे। हमें इस संसार में प्रभु के लिए कष्ट सहते रहना चाहिए। वे कांटों के बीच सोसन फूल की तरह हैं, हमें प्रभु के लिए तेज सुगंध देते रहना चाहिए। आइए हम पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:12 ''यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी हमारा इन्कार करेगा;'' जब हम प्रभु के लिए कष्ट सहेंगे, तो वह हमारे बारे में पिता को याद दिलाएंगे। परन्तु जब हम उनका इन्कार करेंगे, तो प्रभु यीशु भी हमें परमेश्वर पिता के सामने इन्कार करेंगे। जब हम प्रभु के लिए दुख उठाते हैं, तो हमें इसे कृपापूर्वक और अपने हृदय में आनंद के साथ करना चाहिए। जब यीशु इस दुनिया में थे, उन्होंने हमारे लिए दुख उठाया। याजकों और महायाजकों से लेकर फरीसी और सदूकी सब उनके पीछे थे। लेकिन हमारे प्रभु परमेश्वर ने सभी कष्टों को अनुग्रह के साथ सहन किया और इस तरह यीशु मसीह का नाम इस धरती पर सबसे ऊंचा

नाम बन गया। दाऊद परमेश्वर का सेवक था, परन्तु उसे भी अपने परिवार और अपने लोगों की ओर से समान रूप से बहुत सताव सहना पड़ा। उसकी पत्नी मीका ने उसे सताया, उसके भाइयों ने उसे सताया, उसके ससुर शाऊल ने उसे सताया, परन्तु दाऊद को जो कुछ कहना था, उसने भजन संहिता 22:6 में कहा, ''परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है।'' लोगों ने उस पर पथराव किया, लगभग मौत के घाट उतार दिया। दाऊद एक धर्मी व्यक्ति और परमेश्वर का शिष्य था। परन्तु दाऊद ने कृपापूर्वक इस संसार के सभी कष्टों को सहन किया। हम यीशु मसीह के जीवन को जानते हैं, यहाँ तक कि क्रूस पर चोर ने भी उन्हें नहीं बख्शा, बल्कि उन्हें अपमानित किया। आइए हम पढ़ें लूका 23:10–12 ''प्रधान याजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते रहे। तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके ठट्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र पहिनाकर उसे पिलातुस के पास लौटा दिया। उसी दिन पिलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए; इसके पहले वे एक दूसरे के बैरी थे।'' यहाँ हम देखते हैं कि दो शत्रु यीशु मसीह को सताने के लिए इकट्ठे हो गए। हेरोदेस और पिलातुस यीशु को परेशान करने और उन्हें अपमानित करने के लिए मित्र बन गए। आइए हम भी पढ़ें वचन 18–19 ''तब सब मिलकर चिल्ला उठे, "इसका काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे! वह किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था, और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था'' यहाँ हम देखते हैं कि कैसे लोग चिल्ला रहे थे ''उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ और बरअब्बा को छोड़ दो''। आइए हम पढ़ें मरकुस 15:32 ''इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें।'' और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे।'' अलग–अलग तरीकों से हम देखते हैं कि कैसे यीशु ने इस धरती पर दुख उठाया और कैसे उन्होंने सभी अपमान और पीड़ा और कष्ट को स्वीकार किया। फिलिप्पियों 2:9–11 ''इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।'' हाँ, प्रत्येक घुटना को प्रभु यीशु मसीह के सामने झुकना चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि 'वह अकेले ही प्रभु है'। याद रखें, अगर हम आज पीड़ित हैं, तो हमें यह सोचना चाहिए कि हमारे सभी दुख, सुधार, अपमान भविष्य के लिए हमारे अपने अच्छे के लिए हैं। यीशु मसीह ने इस संसार में कष्ट सहा, इस पृथ्वी पर प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा करते हुए वचन 10 कहता हैं ''कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें;'' हमारा जीवन कांटों के बीच एक सोसन फूल की तरह होना चाहिए, जो एक अच्छा सुगंध देना चाहिए और कई मधुमक्खियों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहिए। हालाँकि हमारे जीवन में बचने का रास्ता होगा, लेकिन जब हम प्रभु के लिए कष्ट उठाना चुनते हैं, तो हम उनकी दृष्टि में बहुत कीमती हो जाएंगे। हम उनके प्रिय और उनके चुने हुए बनेंगे। अय्यूब के जीवन में, हम देखते हैं कि उसने अपने जीवन में सतावों का सामना किया है, आइए हम पढ़ें अय्यूब 16:10 ''अब लोग मुझ पर मुँह पसारते हैं, और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थप्पड़ मारते, और मेरे विरुद्ध

भीड़ लगाते हैं।'' अय्यूब के जीवन में प्रत्येक ने उसे अपमानित किया। जब दर्द में, उसने अपनी पत्नी को सांत्वना और प्यार के लिए देखा, लेकिन उसकी पत्नी ने उसे प्रभु को श्राप देने और मरने के लिए कहा। आइए हम पढ़ें अय्यूब 6:1–4 ''फिर अय्यूब ने कहा, "भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी विपत्ति तुला में रखी जाती! क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी ठहरती; इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं। क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे अन्दर चुभे हैं; और उनका विष मेरी आत्मा में पैठ गया है; परमेश्वर की भयंकर बात मेरे विरुद्ध पाँति बाँधे हैं।'' अय्यूब धर्मी और परमेश्वर का महान शिष्य था। वह प्रभु परमेश्वर को इंकार नहीं कर सका, बल्कि उसने प्रभु के लिए कष्ट सहना और मरना चुना। अंत में, हम उन आशीषों को देखते हैं जिनका आनंद अय्यूब ने लिया था। हम सभी विश्वासी हैं, हम में से बहुत से लोग कहते हैं कि मेरी प्रार्थनाओं से लोग ठीक हो जाते हैं, मेरी प्रार्थनाओं से चमत्कार देखे जाते हैं। लेकिन याद रखना कि बहुत कम लोग हैं जो कांटों के बीच सोसन फूल की तरह अपना जीवन जीते हैं, तेज सुगंध देते हैं और कई मधुमक्खियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हमें बहुतों को प्रभु परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह में लाना चाहिए। ये वे हैं जो परीक्षाओं और क्लेशों से दूर भागने के बजाय प्रभु के लिए कष्ट उठाना चाहते हैं। आइए हम पढ़ें अय्यूब 19:3–5 ''इन दसों बार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे, तुम्हें लज्जा नहीं आती कि तुम मेरे साथ कठोरता का बरताव करते हो? मान लिया कि मुझ से भूल हुई, तौभी वह भूल तो मेरे ही सिर पर रहेगी। यदि तुम सचमुच मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई करते हो और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करते हो,'' अंत में अय्यूब केवल प्रभु परमेश्वर को पुकारने का निर्णय लेता है, अय्यूब 12:4 कहता है, ''मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता था, और वह मेरी सुन लिया करता था; परन्तु अब मेरे मित्र मुझ पर हँसते हैं; जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह हँसी का कारण हो गया है।'' उसने केवल प्रभु की ओर देखा और प्रभु से प्रार्थना की। उन्होंने अपने दोस्तों के लिए भी प्रार्थना की। हाँ, हम जानते हैं कि परीक्षाओं के अंत में अय्यूब का जीवन कितना धन्य था, उसे 200 प्रतिशत अच्छा किया गया था। यही सोसन फूल का सही अर्थ है। हमारा जीवन प्रभु के लिए एक सच्ची गवाही होना चाहिए। सभी प्रचारक अय्यूब, याकूब, इसहाक, दानिय्येल, दाऊद आदि के बारे में प्रचार करते हैं, क्योंकि ये गवाही के जीवन हैं, यह एक सोसन के फूल का जीवन था जो मधुमक्खियों को आकर्षित करने और प्रभु के प्यार की घोषणा करने के लिए अच्छी सुगंध देता था। बुद्धिमान की तरह हमारा जीवन भी प्रभु के लिए सोसन फूल का जीवन होना चाहिए, अय्यूब के जीवन में सभी परीक्षणों और क्लेशों के माध्यम से, उसने अंततः प्रभु की ओर देखा और न केवल अपने लिए बल्कि अपने दोस्तों और अपने उत्पीड़कों के लिए भी प्रार्थना की। इस प्रकार, उसने अपना आशीर्वाद सौ गुना प्राप्त किया।

भजन संहिता 126:4–6 ''हे यहोवा, दक्खिन देश के नालों के समान, हमारे बन्दियों को लौटा ले आ। जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।'' इस प्रकार, हमें अपने प्रभु परमेश्वर के साथ जुड़ना चाहिए। हम आज भले ही

दुख और पीड़ा में हों, लेकिन परमेश्वर ने उनके लिए एक महान कल की योजना बनाई है जिन्होंने प्रभु के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया है। कल उनका जीवन धन्य होगा और परमेश्वर की कृपा से परिपूर्ण होगा। आइए हम प्रेरित पौलुस के जीवन को देखें, इससे पहले कि वह परमेश्वर द्वारा चुना गया, जब वह शाऊल था, जिसने परमेश्वर के बच्चों को सताया था। लेकिन एक बार जब वह प्रभु परमेश्वर से मिला, तो उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया। वह यहोवा परमेश्वर के लिए सौ कोड़े लेने को भी तैयार था। आइए हम पढ़ें फिलिप्पियों 3:7–11 में ''परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है; ताकि मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।'' वचन 7 कहता है ''परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।'' वचन 11 कहता है ''कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।'' उसने सब कुछ को कुछ भी नहीं माना, प्रभु परमेश्वर के लिए उसने सब कुछ धूल के रूप में समझा। एक बार जब प्रभु परमेश्वर ने उसके जीवन को छुआ, तो वह एक नया इंसान था और उसने अकेले प्रभु के लिए जीने का फैसला किया। उसका जीवन सोसन के फूल का जीवन था। रोमियों 8:33–39 कहता है ''परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है। कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, ''तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।'' परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।'' कौन उनके चुने हुए पर उंगली उठा सकता है या उन पर दोष ढूंढ सकता है। हमें परमेश्वर यहोवा से कौन अलग कर सकता है। कोई भी परीक्षा, क्लेश, संकट, अकाल या जीवन के संकट हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकती। हाँ हम यहोवा परमेश्वर के लिए बलि के मेमने हैं। लेकिन मनुष्य के रूप में हम ही हैं, जब हमारे जीवन में परीक्षाएँ और क्लेश आते हैं, तो हम परमेश्वर को त्यागने का निर्णय लेते हैं। लेकिन हमें उस परमेश्वर को याद रखना चाहिए जो हमारे भीतर है जो इस दुनिया में उनसे कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। इस प्रकार पौलुस कहता है कि कौन मुझे मेरे प्रभु से अलग कर सकता है, कुछ भी नहीं। क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है जिन्होंने

इस संसार को जीता है। यीशु ने इस संसार को क्रूस पर जीत लिया है, उनके उत्पीड़कों ने भी उन्हें बैंजनी रंग का वस्त्र पहनाया और उनके सिर पर कांटों का ताज पहनाया। अलग–अलग तरीकों से, यीशु ने आपके और मेरे लिए क्रूस पर दुख उठाया, लेकिन अंत में कोई भी उन्हें उनके पिता परमेश्वर से अलग नहीं कर सका। कोई भी उनके जीवन को तब तक नहीं छू सकता था जब तक कि उन्होंने अपने जीवन को अपने पिता के हाथों में सौंप न दिया। इसलिए हमें भी इस संसार में अपने कष्टों की परवाह नहीं करना चाहिए, हमें सोसन फूल का जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। प्रेरित पौलुस लिखता है 2 कुरिन्थियों 12:10 में ''इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं में, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ।'' पौलुस कहता है कि जब ये सब मुझ पर पड़े, तो हमें किसी भी उत्पीड़न का सामना करने में प्रसन्न होना चाहिए। हमारे जीवन में भी जब दुख और दर्द हमारे ऊपर आते हैं, तो हमें उन शास्त्र को याद रखना चाहिए जो हम आज पढ़ रहे हैं, ताकि हम दृढ़ हों और हम उस शैतान से और भी अधिक शक्तिशाली तरीके से लड़ सकें और उसका चेहरा और भी काला कर सकें। हमें कभी भी झुकना नहीं चाहिए और न ही अपने आप को उस शैतान के हाथों में सौंप देना चाहिए। हमें कभी भी डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए और हमें असहाय नहीं बनना चाहिए। हमारे अविश्वास के बजाय हमारा विश्वास मजबूत होना चाहिए ताकि हम अपना विश्वास न खो सकें। दानिय्येल ने साहस से परमेश्वर के विश्वास के साथ पिंजरे में सिंह का सामना किया, जब की उसके दोस्तों को आग की भट्टी में डाल दिया गया था, तो वे परमेश्वर में अपने विश्वास के कारण साहसपूर्वक अंदर गए। इसलिए जब भी हम पर शैतान का प्रभाव पड़े, तो आइए हम शैतान का सामना करने के लिए तलवार यानी 'वचन' का इस्तेमाल करें। 1 थिस्सलुनीकियों 2:2 ''वरन् तुम आप ही जानते हो कि पहले फिलिप्पी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ।'' इसके बावजूद उसने सभी कठिनाइयों का सामना किया, फिर भी पौलुस थिस्सलुनीकियों को प्रचार करना जारी रखता है। यह हमारा विश्वास होना चाहिए इब्रानियों 13:13 ''इसलिये आओ, उस की निन्दा अपने ऊपर लिये हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें।'' हमें कभी भी अपने क्रूस को कम नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें प्रभु के लिए अपने हर परीक्षण और क्लेश का बड़े उत्साह के साथ सामना करना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि हमारा हर दुःख केवल प्रभु की इच्छा और योजना है। जीवन में कोई शार्ट कट नहीं होता है। प्रभु ने हमें क्रूस दिया, वह हमें हमारे क्रूस पर काबू पाने के लिए धीरज, निर्भरता और विश्वास भी देंगे।

यह संदेश इसे पढ़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आशीर्वाद लाए! प्रभु की स्तुति हो!

पास्टर सरोजा म।